दिग्विजयनाथ स्नातकोत्तर महाविद्यालय
गोरखपुर-273001
(नैक प्रत्यायित 'B++' श्रेणी)
सम्बद्ध
दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

☎ : 0551-2334549
: 09792987700
e-mail : dnpggkp@gmail.com
website : www.dnpgcollege.edu.in

पत्रांक : /2022–23 दिनांक 26.08.2022

प्रकाशनार्थ

दिनांक 26.08.2022, गोरखपुर! "भारत में लोकतंत्र का विकास ज्ञान के द्वारा ही परिवर्तित, संवर्धित व विकासोन्नमुख होगा, जिसके लिए समाज का शिक्षित होना आवश्यक है। इसीलिए पूर्व प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा का तेवर और कलेवर क्या हो इसके निमित्त कोठारी आयोग अस्तित्व में आया। जिसने शिक्षा और राष्ट्रीय विकास' पर अपनी रिपार्ट प्रस्तुत की। कोठारी आयोग की रिपार्ट शिक्षा जगत का एक वृहद घोषणापत्र है। महंत दिग्विजयनाथ जी महाराणा प्रताप के वंशज हैं। जिन्होने कभी राष्ट्र और राष्ट्रीयता से समझौता नहीं किया, भारत ऐसे महापुरूषों का राष्ट्र है। समाज के सम्मान व स्वाभिमान की रक्षा के लिए महंत दिग्विजयनाथ जी हमेशा आगे रहे हैं।"

उक्त बातें दिग्जियनाथ पी.जी. कालेज में ज्ञान और विज्ञान की समरसता की गंगा बहाने वाले महंत दिग्विजयनाथ जी की स्मृति में आयोजित व्याख्यानमाला के द्वितीय दिवस ज्ञान लोकतंत्र और विकास' विषय पर छात्र–छात्राओं का सम्बोधित करते हुए प्रो. हरिकेश सिंह पूर्व कुलपति जय प्रकाश विश्वविद्यालय, छपरा बिहार ने कही।

उन्होने लोकतंत्र की चर्चा करते हुए कहा कि भारतीय लोकतंत्र एवं यूरोपीय लोकतंत्र दोनों विपरीतार्थक है। पश्चिमी लोकतंत्र के विपरीत भारतीय लोकतंत्र वसुधैव कुटुंम्बकम की धारणा पर अधारित है। जहां वृहद चेतना में समता, भ्रातृत्व न्याय एवं स्वतंत्रता का आविर्भाव होता है। भारत कल्याण एवं भद्रता का भव्य भारत है जो निर्जीव व सजीव सबके साथ समभाव रखता है, जिसकी आत्मा लोकचेतना में अन्तर्निहित है। वास्तव में दुनिया में मानव सभ्यता की सबसे बड़ी उपलब्धि लोकतंत्र है और लोगों की आकांक्षाओं का जो समुच्चय है वही संविधान है।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. ओम प्रकाश सिंह ने कहा कि हम स्वामी विवेकानन्द के वेदान्तिक समाजवाद के अनुयायी है। आधुनिक लोकतंत्र की संकल्पना भारत के लिए नया नहीं है बल्कि हमारे आध्यात्मिक परंपरा में लोकहित व लोकमंगल का संयुक्त संकल्पना ही लोकतंत्र है। भारत में पशु पक्षियों में भी ज्ञान के आदान–प्रदान की बोधगम्यता थी जिसका प्रमाण कागभुसुंडी एवं पक्षीराज जटायु हैं। भारत साधना, स्वाध्याय व शहादत की धरती है। डॉ. सिंह ने भारतवर्ष की व्याख्या करते हुए कहा कि भा का आशय दिव्य ज्ञान, रत से आशय लगा हुआ, वर्ष से आशय पीढ़ी दर पीढी संतति का ज्ञान है। अर्थात दिव्य ज्ञान में लगा हुआ पीढी दर पीढी समष्टि के ज्ञान का सम्मिलित स्वरूप ही भारतवर्ष है। गांधी का सर्वोदय और दीनदयाल जी का अन्त्योदय ही भारतीय लोकतंत्र का आधार है। इसी संकल्पना के साथ वर्तमान गोरक्षपीठधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ जी महाराज मुख्यमंत्री उ.प्र. शासन अपने दायित्व का निर्वहन कर रहे हैं।

कार्यक्रम का संचालन डॉ. सत्यपाल सिंह ने तथा स्वागत भाषण प्रो. धीरेन्द्र सिंह ने किया। इस कार्यक्रम में श्री सुरेन्द्र चौहान, श्री इन्द्रेश पाण्डेय, डॉ. विवेक शाही, डॉ. शैलेश सिंह, डॉ. सुनील सिंह, डॉ. रूक्मिणी चौधरी सहित छात्र/छात्रायें उपस्थित रहे।

डॉ. सुनील कुमार सिंह
सह-मीडिया प्रभारी